फाउंटेन्स (Fountains) मठ

Photograph© Kippa Matthews

एक नए इसाई मठ का प्रारंभ

1132 में, यॉर्क में सेंट मेरी के इसाई मठ में मतभेद के बाद, 13 बेनेडिक्ट सन्यासियों को यॉर्क के आर्चबिशप थर्स्टन के संरक्षण में ले लिया गया। उन्होंने उन्हें स्कैल नदी की घाटी में स्थान दिया। ये सन्यासी 27 दिसंबर, 1132 को यहां आए।

यह एक अच्छा और शांतिपूर्ण स्थल था। इसे मौसम से बचाव मिला हुआ था। यहां भवन निर्माण के लिए लकड़ी और पत्थर थे तथा ऊपर ऊँचे किनारों पर झरनों समेत नदी का खूब सारा पानी था। मठ का नाम, सेंट मेरी ऑफ फाउंटेन्स संभवतः इन झरनों से या फिर St Bernard de Fontaines से ही पड़ा होगा। वे फ्रांस में 1115 से 1153 तक Clairvaux में Cistercian Abbot थे। उन्होंने 1135 में फाउंटेन के सन्यासियों को Cistercian Order में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया। Cistercian के सहयोग से नए मठ को स्थापित करने और एक महत्वाकांक्षी भवन कार्यक्रम शुरू करने में मदद मिली।

Photograph© Richard Jemison

वस्त्र पहनते थे, इसलिए वे श्वेत सन्यासी के रूप में चर्चित हो गए। अन्तःवस्त्र त्याग दिया गया, हालांकि लंबी यात्राओं के लिए जांघिये प्रदान किए जाते थे। ये 'गायक' सन्यासी पढ़ और लिख सकते थे। उन्होंने शपथ ली और स्वयं को प्रार्थना और ध्यानयुक्त जीवन के प्रति समर्पित कर दिया।

वे अधिकांश समय मौन रहते थे, एक दूसरे से बातचीत करने के लिए संकेतों का प्रयोग करते थे। वे प्रति दिन 8 बार चर्च सेवा में ईश्वर की स्तुति वाले गीत गाते थे। वे अधिकतर रोटी और सब्जी का साधारण आहार लेते और बीयर पीते थे।

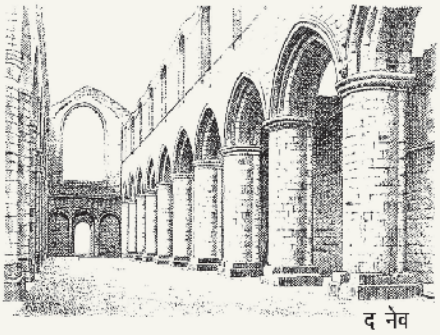

द नेव

एक सफल मठ

मठ ने समृद्ध परिवारों के प्राणों की रक्षा के लिए सन्यासियों की प्रार्थनाओं के बदले धन और भूमि के उपहार लेने शुरू कर दिए। ज्यादा भूमि मिलने के साथ ही, सन्यासियों के अपने प्रार्थनायुक्त जीवन को बनाए रखने के लिए, उनका शारीरिक कामकाज बहुत बढ़ गया।

लेब्रदर्स

ये वे सन्यासी थे जो खेतों या उसमें बने विशाल भवनों में काम करते थे। उन्होंने मठ के लिए जरूरी शपथ लीं लेकिन सफेद के स्थान पर भूरे कपड़े पहने। वे मठ के रोजमर्रा के काम करते थे, चर्च सेवा में कम हिस्सा लेते थे।

उनके ज्यादा शारीरिक काम के कारण उन्हें सोने के लिए ज्यादा घंटे और ज्यादा भोजन दिया गया। बिना उनके Fountains कभी भी इतना धनवान नहीं हो सकता था। अनेक लोगों ने मठ की सेवा राजमिस्त्री, चर्मकार, जूते बनाने वाले और लोहार के रूप में की लेकिन उनका मुख्य काम मठ की भेड़ों के विशाल झुंड की देखभाल करना था। ये उन विशाल भवनों में रहती थीं जो Lake District के पश्चिमी किनारे और Teesside के उत्तर की ओर फैले हुए थे। ऊन मठ की आय का प्रमुख स्रोत हो गई। मठ सीसा और लोहे के खनन, पत्थर खुदाई और घोड़ों के पालन पोषण का काम भी करता था।

कठिन समय

द चैप्टर हाउस

तथापि, सन् 1400 तक, इन सन्यासियों ने अपनी भूमि को उससे भी कहीं ज्यादा फैला लिया था जितना उनके जीने के लिए जरूरी था और इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण यह था कि इस विस्तार को वे संभाल नहीं सके।

14वीं शताब्दी में, खराब फसलें हुई, भेड़ों को बीमारियां लग गई, भूखे स्कॉट लोगों और प्लेग (काली मौत) ने हमला बोल दिया। इतने लोगों की प्लेग से मौत हो गई कि लेब्रदर्स रह ही नहीं गए और मठ को अपने विशाल भवन पट्टे पर देने पड़े। तब सन्यासियों को पैसा मिला और उन्होंने इसे किराए के रूप में लिया। 15वीं शताब्दी के अंत तक भेड़ फार्मिंग का स्थान डेयरी फार्मिंग ने लेना शुरू कर दिया

अंतिम वर्ष

मठ का मठाधीश बहुत शक्तिशाली व्यक्ति था। मारमाड्यूक हूबी जो 1495 से 1526 तक मठाधीश रहा, ने एक प्रभावशाली टावर बनवाया। तथापि, 15वी शताब्दी के तीसरे दशक तक, राजा हेनरी अष्टम चर्च के प्रभाव और स्वतंत्रता से नाराज हो गया। उसने मन में इसके धन की चाह रही। पार्लियामेंट के एक अधिनियम द्वारा, उसने सारे मठों और नन मठों को बंद करा दिया जिसे डिजोल्युशन ऑफ मोनेस्ट्रीज़ नाम से जाना जाता है। सबसे बडे और सबसे धनवान मठ के रूप में, Fountains नवंबर, 1539 में बंद होने वाले अंतिम मठों में से एक था। मठाधीश को £100 प्रति वर्ष की पेंशन मिली जो उस समय के हिसाब से काफी बड़ी राशि थी, उसके प्रायर को £8 और 30 सन्यासियों में से हरेक को £5 की राशि मिली। छत के सीसे का इस्तेमाल हथियार बनाने में किया गया। दागयुक्त शीशे को हटा दिया गया और कुछ का पुनः प्रयोग रिपन कैथेड्रल और यॉर्क मिन्स्टर में किया गया। मठ 1540 में बेच दिया गया।

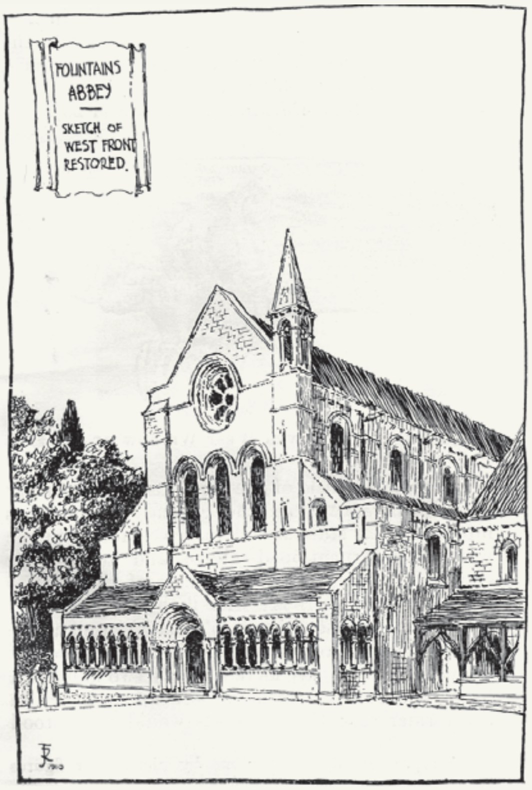

मठ संभवतः ऐसा दिखाई देता था।

www.fountainsabbey.org.uk
With thanks to the *Harrogate & Dales Centre Association* for their help to produce this leaflet.
Charity no. 205846